REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

आधुनिक भारत के अमर स्वतन्त्रता सेनानी : लांसनायक रघुनाथ सिंह मीणा

सुरेश कुमार मीणा
पीएच.डी. शोथार्थी , इतिहास विभाग ,
मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

सार संक्षेप

वर्ष 1971 में भारत–पाक के बीच बांग्लादेश के प्रश्न को लेकर सैन्य संघर्ष हुआ इसमें भारतीय सैनिकों ने साहसिक संघर्ष करते हुए पाक सैनिकों को खदेड़ दिया और इस लड़ाई में लांसनायक रघुनाथ सिंह भी सम्मिलित थे जिन्हें बाद में उनकी अदम्य वीरता के लिए वीरचक्र से सम्मानित किया गया। शोध–पत्र में लांसनायक रघुनाथ सिंह की भूमिका को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। यह शोध पत्र मूलतः प्राथमिक स्रोतों एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार पर आधारित है।

विशिष्ट शब्द –लांसनायक रघुनाथ सिंह, सैनिक, भारत–पाक, वीरता मेडल, बांग्लादेश।

प्रस्तावना :

भारत–पाक संघर्ष (1971) की शुरूआत 3 दिसम्बर 1971 को हुई। युद्ध की पहल पाकिस्तानी सेना द्वारा की गई, पाक द्वारा भारतीय वायुसेना के 11 स्टेशनों पर हवाई हमले से हुआ, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सेना पूर्वी पाकिस्तान में बांग्लादेशी स्वतन्त्रता संग्राम में बंगाली राष्ट्र गुटों समर्थन में सम्मिलित हो गई। पाक लगातार हमलों द्वारा भारतीय सुरक्षा को खतरे में डाल दिया जिसके प्रत्युत्तर में भारत–पाक सीमाओं 5 लाख सशस्त्र सैनिकों को तैनात किया गया। भारत की सेना की तुलना में पाक सेना 365000 सशस्त्र सेना थी उस समय पाक दो भागों में विभक्त था पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान। इस युद्ध में भारत के 2500 से 6843 सैनिक मारे गये जबकि पाकिस्तान के 9000 सैनिक मारे गए। युद्ध में भारत की विजय हुई जिसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश नाम से एक स्वतन्त्र देश का उदय हुआ जिसे विश्व मानचित्र में एक नयी पहचान मिली। इस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने भारत को विजय दिलाने में साहस और वीरता का अविस्मरणीय कार्य किया।

भारत–पाक युद्ध (1971) में शहीद होने वाले सैनिकों के बलिदान को, घायल होने वाले सैनिकों के बहे–रक्त को एवं विजय प्राप्त कर जीवित लौटने वाले सैनिकों की खुशी को इतिहास के पन्नों पर लिखकर भारत के शौर्य और वीरता को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

जीवन परिचय(लांसनायक रघुनाथसिंह)

भारत–पाक युद्ध (1971)में विजय प्राप्त कर जीवित लौटने वाले सैनिकों में लांस नायक रघुनाथ सिंह भी सम्मिलित थे जो जैसलमेर में सदावली पोस्ट में तैनात थे। रघुनाथ सिंह का जन्म 14 जून 1940 को राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर तहसील के अमरवासी गांव में एक गरीब मीणा परिवार में हुआ। पिता का नाम माधोसिंह और माता का नाम गौरी था।

लांसनायक के बचपन का जीवन कृषि कार्य व पशुपालन में बीता। लांसनायक में देश की रक्षा हेतु सेना में भर्ती होने का जुनून का बचपन से ही था, वे अपने पूर्वजों के बलिदान व देश–प्रेम की भावनाओं से प्रेरित थे। उनके क्षेत्र से अनेक लोग भारतीय सेना में थे जिससे भी उन्हें देश की रक्षा करने की प्रेरणा मिली। 14 जून, 1963 को देवली छावनी से सेना में भर्ती हुए। 30 जून 1987 को हवलदार के पद से सेवानिवृत्त हुए उसके पश्चात् पुनः कृषि कार्य में लग गये उनके गांव के लोग उन्हें ''**वीरचक्र दाजी**''के नाम से पुकारते है। 15 फरवरी 2012 को वीर चक्र प्राप्त रघुनाथ सिंह बीमारी के कारण अपना पार्थिव शरीर का त्याग कर दिया

भारत–पाक संघर्ष दौरान योगदान

भारत–पाक युद्ध (1971) में पश्चिमी भारत की सीमा पर तैनात 17वीं ग्रेनेडियर्स बटालियन की एक टुकड़ी में लांसनायक रघुनाथसिंह भी सम्मिलित थे।उनके साथ उनकी टुकड़ी में सैनिक जगदेव मीणा भी थे जिनके द्वारा भारत–पाक युद्ध (1971) की जानकारी प्राप्त हुई। लांसनायक रघुनाथ सिंह ने 5 दिसम्बर, 1971 सुबह आदेश मिलने पर भारतीय सैनिकों द्वारा दुश्मनों पर आक्रमण कर दिया। लांसनायक रघुनाथ सिंह अपनी टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होनें अपनी टुकड़ी का नेतृत्व बड़ी वीरता के साथ किया। उनकी टुकड़ी युद्ध में दुश्मनों से लड़ने में सबसे आगे थी जो बड़ी वीरता के साथ दुश्मनों का मुकाबला कर रही थी।

दुश्मनों द्वारा भी लगातार भारी मात्रा में गोलाबारी की जा रही थी इनकी बटालियन जैसलमेर की सदावली पोस्ट पर तैनात थी। भारतीय सैनिकों के पास राइफल्स 84 आर एल मशीनगन, एन एमजी मशीनगन और गोलाबारूद इत्यादि हथियार थे। इस युद्ध में एक पाकिस्तानी जासूस भारतीय सीमा में घुस आया और भारतीय युनिफार्म पहनकर मेजर के रूप में कम्पनी में आदेश देता रहा। भारतीय सैनिक हमले के दौरान उन्हें पहचान नहीं पाये। उक्त जासूस मेजर द्वारा गोले ज्यादा दूरी तक न दागने, गोलों की रेंज कम रखने जैसे भारत विरोधी आदेश लगातार दिये गये जिस कारण से पाक सेना भारतीय सैनिकों से लड़ पाने में सक्षम होती जा रही थी।

लांसनायक सिंह 17वीं ग्रेनेडियर्स बटालियन की एक कम्पनी की मीडियम मशीनगन टुकड़ी में थे। वह भारत की सुरक्षा के भाव को मन में लिये हुए दुश्मनों से लगातार निडरता से लड़ते रहे। उनके द्वारा दुश्मनों की भारी गोलाबारी में भी भारतीय सेना की ताकत और शौर्य का प्रमाण दिया। लांसनायक दुश्मनों की भारी गोलाबारी में भी बड़ी निर्भीकता से अपना उत्तरदायित्व व मातृभूमि की रक्षा करने की प्रतिज्ञा को न भूलते हुए बिना अपने जीवन की परवाह किए डटे रहे और आग की तरह जलती हुई बैरल (गोले दागने के लिए तोप के आगे लगा बड़ा पाईप) को उठा लिया गया जिससे उनके हाथ जल गए इसके बावजूद भी वे दुश्मनों पर भारी मात्रा में लगातार गोलाबारी करते रहे। इस कारण भारतीय सेना को दुश्मनों को परास्त करने में कामयाबी मिली।

इस साहसिक कार्य द्वारा रघुनाथ सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, शक्ति और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया जिससे उन्हें बाद में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी. गिरी द्वारा वीर चक्र से सम्मानित किया गया। 7 अक्टूम्बर, 1974 को रक्षा मंत्रालय द्वारा भी उनकी वीरता की प्रशंसा करते हुए रघुनाथ सिंह कोएक प्रशंसा पत्र दिया। इसी कड़ी में उन्हें दीर्घ सेवा मेडल,संग्राम मेडल, रक्षा मेडल, समर सेवा मेडल, पश्चिमी स्टार मेडल, मरूस्थल स्टार मेडल से भी सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा उनकी वीरता के कारण उन्हें 50 बीघा जमीन भी सम्मान के रूप में दी गई। लांसनायक की वीरता से अत्यधिक प्रभावित होकर महाराणा प्रताप स्मारक समिति, उदयपुर द्वारा 16 जून 1999 को ''प्रताप जयन्ती'' पर महाराणा प्रताप वीरता पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

निष्कर्ष

लांसनायक रघुनाथ सिंह का भारत पाक युद्ध में वीरता का प्रदर्शन एवं भारत की विजय में योगदान इतिहास के पृष्ठों में अंकित होने से आमजन में देश प्रेम की भावनाएं सदैव बनी रहेगी औरसाथ ही समय आने पर युवा पीढ़ी भी प्रेरित होकर देश की रक्षार्थ सैन्य क्षेत्र में अपनी सेवाएं देने में तत्पर रहेगी।

सन्दर्भ सूची :

प्राथमिक स्रोत

– कार्यालयी आदेश, जिलाधीश, भीलवाड़ा 'दिनांक 26–1–1972
– Certificate of Service, 620/86, 30-06-1987
– रक्षामंत्रालय, भारत सरकार का वाचन पत्र दिनांक 7–10–1974

संस्मरण एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार

– जगदेव मीणा (पूर्व सैनिक)
– प्रभुलाल मीणा (पूर्व सैनिक)
– किशनी देवी (पत्नी)
– प्रहलाद (पुत्र)
– रामराज (पुत्र)

द्वितीयक स्रोत (पुस्तकें)

– नन्दा के. के. (2015) – 1971 भारत–पाक युद्ध
– ल्योन पीटर (2000) – कॉन्फिल्क्ट बिटवीन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान : एन एनसाइक्लोपीडिया

LBP PUBLICATION